हिंदी भविष्य की भाषा है – मोहन राणा

डॉ॰ अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी
अलायंस विश्वविद्यालय, बंगलोर
फोन – 8886995593/8142623426
ईमेल – anupama.tiwari@alliance.edu.in

(दिल्ली के मोहन राणा जी वर्तमान में ब्रिटेन के बाथ शहर के निवासी हैं। परभूमि पर रहते हुये भी आप देश की संस्कृति के प्रचार प्रसार के प्रति समर्पित भाव रखते हैं। आपकी कवितायें जीवन के गंभीर तथ्यों को मूर्तरूप देने में समर्थ हैं। सत्य की खोज, मुख स्तुति से परे, विकासशील भावना से ओत – प्रोत, विसंगतियों को तटस्थता और निर्भीकता से उजागर करने वाले कवि मोहन राणा से अनुपमा तिवारी से फोन पर हुये बातचीत का महत्वपूर्ण अंश इस प्रकार है -)

अनुपमा तिवारी : प्रवासी भारतीय , विशेषकर साहित्यकार भारतीय सरकार और पाठकों से क्या अपेक्षाएं रखते हैं ?

मोहन राणा : इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत करने से पहले मैं एक प्राथमिक प्रश्न पूछना चाहता हूँ कि हम भारत से दूर एक देश में निवास कर रहे हैं तो किस आधार पर भारत सरकार और हिन्दी के पाठक से अपेक्षा रखें, क्या यह सोचना उचित है कि हम उस अपेक्षा के मूर्त रूप को ग्रहण करने के अधिकारी हैं? ऐसा क्या हमने लिखा या किया कि सड़क पर चलता कोई व्यक्ति फेसबुक पोस्ट पढ़कर एक पल को ठहर कर आपके लेखन जीवन के बारे में सोचे! और फिर तथाकथित हिन्दी की मुख्य धारा का साहित्य जगत प्रवासी लेखन की उपेक्षा क्यों करता है?व्यक्तिगत रूप से मैं किसी व्यक्ति या संस्था से अपेक्षा नहीं क्यों अपनी अस्मिता की पुष्टि के मुझे उनकी स्वीकृति आवश्यक नहीं लगता मेरी रचनात्मकता उसकी साक्षी हो।

अनुपमा तिवारी : ब्रिटेन में हिन्दी साहित्य की स्थिति कैसी है? भाषा , शिक्षण और साहित्य के प्रति लोगों का रुझान कैसा है ?

मोहन राणा : ब्रिटेन में हिन्दी साहित्य एक छोटे से समूह तक सीमित है जो हिन्दी में लेखन करता है।

कई दशकों के राजकीय समर्थन, बढ़ती लोकप्रियता और प्रसार और भारी व्यय के बावजूद हिंदी और उसके साहित्य की हालत आज ऐसी क्यों है कि जब भारत से आए हिंदी के एक प्रसिद्ध कवि का लंदन में भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में काव्य पाठ होता है तो सौ सीटों के सभागार में करीब दस लोग मौजूद होते हैं! भाषा और साहित्य को लेकर लंदन उच्चायोग और सांस्कृतिक केंद्र की उदासीनता तो अपने आप में एक प्रश्न है। वहां कार्यरत कर्मचारी आसमान से तो नहीं टपकते वे हिंदी भाषा के ही समाज और देश से उपजे प्रतिनिधि हैं, स्पष्ट है इस तरह की लापरवाही और उदासीनता जो विदेशों में स्थापित भारतीय संस्थाओं में व्याप्त है। उसकी जड़ें हिंदी की भूमि में ही है। यूँ सालाना हिन्दी के प्रसार और महत्व को रेखांकित करते हुए लेखन के लिए सम्मान और हिन्दी दिवस पर काव्य गोष्ठियाँ की जाती हैं।

हिंदी विश्व की प्रमुख भाषा है और साधनों की भारत में कमी नहीं है । एक ओर कुशल और योग्य आयोजकों और प्रशासकों का अभाव है दूसरी ओर उनके लिए खुलकर काम करने का स्पेस नहीं है, हिंदी को ऐसे लोगों की जरूरत है जो साहित्यिक गुटों और राजनीतिक वादों से मुक्त होकर उत्सव या प्रकाशन या किसी संस्था को केवल आंरभ भर न करें बल्कि उन्हें लंबे अरसे तक सक्रिय बनाए रखें आपको मेरी बात दिवास्वप्न लगे पर मेरा यह मानना है, हिंदी भविष्य की भाषा है। यह बात भारत में ही नहीं भारत से बाहर हिन्दी भाषी समाज को रेखांकित करते हुए मैं कह रहा हूँ।

अनुपमा तिवारी : क्या ब्रिटेन में हिन्दी के माध्यम से रोजगार की संभावनाएँ हैं ?

मोहन राणा : हिन्दी में रोज़गार की संभावनाएँ केवल मीडिया और अनुवाद छोटे से दायरे तक ही सीमित हैं।

अनुपमा तिवारी : प्रवासी साहित्यकारों के लिए प्रवासी शब्द कितना सार्थक लगता है आपको ?

मोहन राणा : मनुष्य के अब तक के ज्ञात इतिहास में कविता में ही नहीं लगभग हर कला में स्मृति अवयव की उपस्थिति देखने-सुनने और पढ़ने को मिलती है। कविता के लिए यह रक्त में बहते ऑक्सीजन अणु की तरह अपरिहार्य है। चूंकि मैं यात्राओं और भाषाओं के अलग-अलग भूगोलों में संक्रमण करता रहता हूं इसलिए मेरी कविताओं में स्मृति न केवल एक विषयवस्तु है बल्कि एक स्रोत और आधार भूमि भी बन जाती है। मारीना तस्वेतायेवा ने अपने निबंध 'कवि और समय' में एक

जगह लिखा'हर कवि अनिवार्य रूप से एक उत्प्रवासी है'... अपने देश में भी कवि उत्प्रवासी ही होता है। एक तरह से देखा जाए तो ऊपर से भले ही वह एक व्यक्ति स्मृति हो पर उसकी जड़ों को दाना-पानी हमारी साझा स्मृति की जमीन से मिलता है।

इस प्रसंग मैं यह भी कहना चाहता हूँ हर भाषा का अपना भूगोल होता है उसकी शब्द संपदा भूगोल के देशांतरों में बंधी - संचित होती है। प्रवासी कविता नहीं होती है कविता का लेखक प्रवासी होता है जो परदेश में निवास करता है। परदेश का भूगोल निकट भी सकता है दूरस्थ भी।

अनुपमा तिवारी : "रेत का पुल " में आपकी एक कविता ' भरम अनेक ' में जॉन पाइक के मिर्च की पिचकारी का वर्णन आया है । कृपया उसके बारे में थोडी वृहद जानकारी दें , जिससे अन्य शोधार्थी भी लाभान्वित हो सकें ।

मोहन राणा : इस कविता में दो घटनाओं का उल्लेख है।

पहली घटना में भारत में लोकपाल विधेयक समर्थन में अन्ना हजारे द्वारा दिल्ली में किए आमरण अनशन का उल्लेख है। छात्र और युवा लाखों की संख्या में भारत भर में उसके समर्थन के लिए सड़कों पर आए।

दूसरी घटना अमेरिका की है -

अमेरिका में कि यूसी डेविस कैलिफोर्निया के परिसर में पुलिस लेफ्टिनेंट जॉन पाइक ने धरने पर जमीन पर बैठे "ऑक्युपाई वॉल स्ट्रीट" आंदोलन के दौरान छात्र प्रदर्शनकारियों हटाने और तितर-बितर करने के लिए उनके चेहरों पर सीधे मिर्च की पिचकारी से बिना संकोच किये बहुत निकट से छात्रों पर छिड़काव किया । इस मिर्च रसायन का असर दर्दनाक होता है। प्रभावित प्रदर्शनकारियों की आँखें, नथुनों और मुंह में इस छिड़काव से प्रभावित हो जाते हैं। सारी दुनिया में यह दृश्य प्रसारित हुआ। इस भयानक घटना की विश्वभर में निंदा की गई।